हिन्दी विभाग

सुरभि

2023-2024

प्राचार्य का संदेश

सेवामण्डल एजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित श्रीमती मणिबेन एम.पी.शाह विमेंस कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स, (स्वायत्त) माटुंगा, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय से संलग्न पहला महाविद्यालय है| महाविद्यालय को 'UGC STATUS: College with Potential for Excellence' का दर्जा प्राप्त हुआ है| साथ ही एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय का "महर्षि कर्वे उत्कृष्ट महाविद्यालय 2017-18" के ख़िताब से नवाज़ा गया है| महाविद्यालय का लक्ष्य शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सक्षम, आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक बनाना है| विगत 66 वर्षों से निरंतर इस क्षेत्र में कार्य करते रहना ही अपने आप में महाविद्यालय की एक बड़ी उपलब्धि है|

महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्ययन-अध्यापन किया जाता है| विभाग द्वारा निरंतर विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है| हिन्दी विभाग विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए हमेशा प्रयासरत रहा है| महाविद्यालय की विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों में भी विभाग की सक्रिय सहभागिता रही है| विद्यार्थियों के सृजनात्मक क्षमताओं के विकास की दृष्टि से 'सुरभि-2023-2024' एक महत्वपूर्ण पहल है| इस माध्यम से विद्यार्थियों को सृजनात्मक लेखन के लिए अवसर मिलता है| मैं हिन्दी विभाग के इस प्रयास की सराहना करती हूँ और महाविद्यालय की ओर से उनका हार्दिक अभिनंदन करती हूँ.. |

डॉ. अर्चना पत्की
प्राचार्य

संपादक मंडल

संपादक

डॉ.अर्चना पत्की

सह-संपादक

डॉ. प्रशांत देशपांडे

संपादकीय सदस्य

डॉ वृषाली चौगुले

डॉ संदेशा भावसार

कु. नंदिनी शुक्ला

संपादकीय

महाविद्यालय का हिन्दी विभाग भी विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमताओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध रहा है| हिन्दी विभाग द्वारा प्रतिवर्ष भाषिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है| इन सभी गतिविधियों के अवलोकन हेतु एवं विभागीय शिक्षकों और विद्यार्थियों को भी सृजनात्मक लेखन के लिए मंच मिले, इसी उद्देश्य को सामने रखकर 'सुरभि' पत्रिका की शुरुआत की गई थी| विगत वर्ष सुरभि पत्रिका के पहले अंक को काफी सराहना मिली| इस वर्ष 'सुरभि - 2023-2024' को प्रकाशित किया जा रहा है| हमें विश्वास है कि आपके सामने प्रस्तुत 'सुरभि' - 2023-2024 का अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के द्वारा स्वागत होगा|

जिन्होंने इस काम के लिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हमारा सहयोग दिया उन सभी के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं |

धन्यवाद .. |

डॉ.अर्चना पत्की
डॉ. प्रशांत देशपांडे

अनुक्रमणिका

1. हिन्दी देश की बिंदी - कु. सोनिका मंडल (कविता)

2. जय जवान - ईद्रिसी फातिमा (कविता)

3. चाँद क्यों रूठा .... - कु. नंदिनी शुक्ला (कविता)

4. आजादी व्यर्थ न गवाना है - कु मीनाक्षी शुक्ला (कविता)

5. भ्रुण हत्या - अंजू गुप्ता (कविता)

6. गरीब माँ - लक्ष्मी जायसवाल (कहानी)

7. हिन्दी विभाग की साहित्यिक गतिविधियाँ

"मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।" - विनोबा भावे

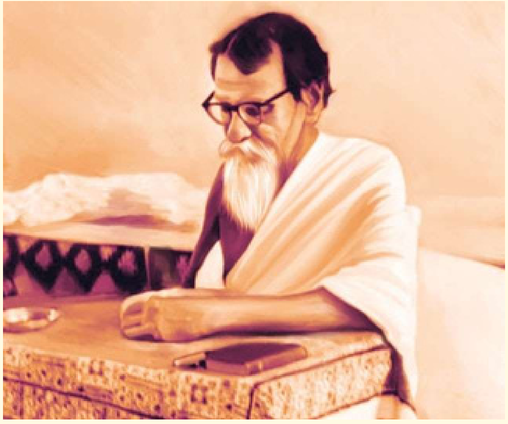

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ट और गहरा संबंध हैं|
डॉ राजेन्द्र प्रसाद

हमें उस भाषा को राष्ट्रभाषा मानना चाहिए जो देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाती है और जिसे स्वीकार करने के लिए महात्मा जी ने हमसे आग्रह किया अर्थात् हिन्दी।
गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

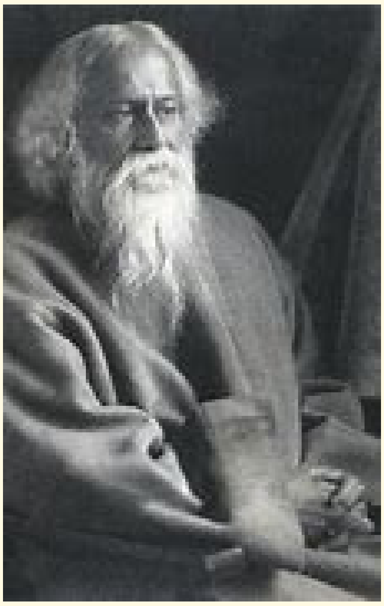

हिन्दी देश की बिंदी

आओ हम हिन्दी पढ़े और पढ़ाएं
हिन्दी हमारी भाषा है,
आओ इसे अपनाएं
अगर भारत का करना है उत्थान,
तो हिन्दी को अपनाना होगा
अंग्रेजी तो विषय मात्र,
हिन्दी को अनिवार्य बनाना होगा|
हिन्दी दिवस एक पर्व है,
इस पर हमें गर्व है
सम्मानित हमारी राष्ट्रभाषा
हम सब की है यही अभिलाषा
हमारी एकता और अखंडता ही,
हमारे देश की पहचान है
हिंदुस्तानी हैं हम और
हिन्दी हमारी जुबान है|

कु. सोनिका मंडल (प्रथम वर्ष, कला, हिन्दी)

जय जवान

देश की रक्षा करने के लिए
जागते रहते है हर काल
हँसते-हँसते छोड़ गए हमें
फांसी पर देश के लाल

देश के लिए अपना घर छोड़
वीरान जगह पर रहते हैं
कड़ी धूप हो या ठंड
हर मुश्किल को सहते हैं

इनकी वजह से गुजर रहा है
दुनिया में हिंदुस्तान का नारा
चमक रहा है आसमान में
प्यारा तिरंगा हमारा

ईद्रिसी फातिमा
(प्रथम वर्ष, कला, हिन्दी)

चाँद क्यों रूठा ....

रूठा हुआ चांद एक रात आंगन में आ बैठा
माता बोली देखो बच्चों, चंदा मामा रूठा
मुन्ना बोला माँ, इसको भी दूध भात खिलाए,
मुन्नी बोली माँ, इसको लोरी यही सुनाए।
मुन्नी बोली चंदा मामा क्यों इतना है अकेला,
क्या चांदनी से लड़कर आया, जो मुख पर शर्म का पल्ला
क्या इसकी माता ने भी इसको है फटकारा
तभी तो देखो फिरता है चंदा मारा - मारा।
मुन्ना बोला बहना मेरी तू इतनी क्यों है भोली,
इस जग की माया से क्या तेरी मति भी डोली
क्यों न हम चन्दा मामा से पूछे, क्यों हैं रूठे
सच - सच कहना चंदा मामा, नहीं बनना झूठे
हंसकर बोला चांद , बच्चों तुम कितने नादान,
इस जग में मेरी क्या तुमने जानी है पहचान।
मामा तो हूं ही तुम सब का, पर मैं हूं सब पर भारी
सर्दी, गर्मी या हो बारिश, यात्रा हरदम जारी
चौदह दिवस की यात्रा मेरी, कृष्ण - शुक्ल पक्ष कहलाती है
पूनम से होकर प्रकाशित, रात अमावस लाती है
दो - दो दिवस की हानि माह में, एक नया चक्र गढ़ जाती है
तीन वर्ष में चंद्र पंचांग, मलमास का माह भी लाती है
किंतु आज लगा है मुझको, टोना एक भारी,
कभी अपोलो ने खोदा था, अब चंद्रयान की बारी।
खुरदरा सा चेहरा है मेरा, उबड़ - खाबड़, धूल - पानी का ये तन
ढूंढ रहा है मानव मुझमें कुछ - कुछ अपना जीवन
लोरी की माला में मैं कभी पिरोया जाता,
छवि नारी का बनकर मैं सुन्दर उपमा पाता
इस चंदा के मुख पर भी क्या, गर्व करेगी नारी,
इन व्यंग्य उपमानों से क्या बच पावेगी नन्हीं कलि वह प्यारी
चंद्रमुख पर ग्रहण लगा है जो उसको कौन बचाएं
किस मुख से मैं समाने जाऊं, राहु – केतु भी डरकर भाग न जाय
अस्तित्व मेरा मिट जायेगा , नहीं मुझे कोई अब डर है
लोरी, गजलें क्या बन पाएंगी एं , बस उसका ही मातम है
अप्रतिम संगीत का स्वर ले हृदय में गुनगुगुनागुती थी
विकल मन पात की लहरें, भी देखो सुगबुगाती थी
रोना तिमीर में छिपके क्यों न चांद को भाया।
हसता हुआ चहरा भी कैसा आज मुरझाया।
तड़प मन है उदासी कि हमसे चांद है छूटा
सितारे हंस रहे हैं.. लेकिन चाँद क्यों रूठा ?

कु. नंदिनी शुक्ला
(एम एम द्वितीय वर्ष, हिन्दी)

आजादी व्यर्थ न गवाना है

स्वर्णिम शिखरों पर तिरंगा लहराना है
देश की प्रतिभा को विश्व को दिखाना है
आजादी को व्यर्थ न गवाना है |

भ्रष्टाचार की बेड़ियों से देश को मुक्ति दिलाना है
भेदभाव को भूलकर एकता को अपनाना है
सत्य अहिंसा का परचम विश्व में लहराना है
आजादी को व्यर्थ न गवाना है |

रूढ़िवादी सोच में परिवर्तन लाना है
संस्कृति और परंपरा का सम्मान बढ़ाना है
देश सर्वोच्च राष्ट्र बनाना है
आजादी को व्यर्थ न गवाना है |

भारतीय ज्ञान-वैभव को विश्व तक पहुँचाना है
भारत को अब फिर से विश्व गुरु बनाना है
आजादी को व्यर्थ न गवाना है |

कु मीनाक्षी शुक्ला
तृतीय वर्ष कला हिन्दी

भ्रुण हत्या

फूल को खिलने से पहले ही क्यों तोड़ देते हैं
एक नये उजाले को क्यों अँधेरे में ढकेल देते हैं
क्या कसूर है उस नन्ही सी कली का
जिसको दुनिया में आने से पहले ही मार देते हैं

समाज को क्यों बोझ लगती है बेटियाँ
आज पूरे जग में नाम काम रही है बेटियाँ
माँ-पिता के बुढ़ापे की लाठी बन रही है बेटियाँ
समाज क्यों बना रहा है बेटियों से दूरियाँ

तुम भी तो किसी माँ की कोख से आये हो
तुम भी तो किसी माँ के लाल कहलाये हो
आज तुम उसी मां पर लाख सवाल उठाते हो
बेटी को मारने के लिए महिषासुर बन जाते हो

ये दुनिया क्यों भूल जाती है
बेटी को भी जीने का अधिकार है
क्योंकि बेटी से हमारा घर और संसार है

आज तुम नारी के अस्तित्व को नकार रहे हो
बेटी को समाज में लाना मजबूरी समझ रहे हो
तो याद रखना मेरे दोस्त वह दिन भी जरूर आएगा
एक दिन तू भी बहुत पछताएगा
अपने ही बेटों की गृहस्थी बसाने का सपना
अधूरा रह जाएगा ..

समाज तु मत कर ऐसा पाप,
की एक बेटी काली बनकर कर दे तेरा संहार
दोस्तों बंद करो बेटियों को मारना।
बंद करो या पाप.
सिखाना है मुझको इस समाज को
कि भ्रुण हत्या है एक अभिशाप

अंजू गुप्ता स्नातक प्रथम वर्ष हिन्दी

गरीब माँ

सुनीता गरीब है .. अधिक पढ़ी-लिखी नहीं है .. इसलिए उसे लगता है, वह अपनी एकलौती बेटी का लालन-पालन ठीक से नहीं कर पाएगी| अपनी बेटी गुड़िया को गोद दे देती है यह सोचकर कि उसे उसके नए माता -पिता पढ़ाएंगे लिखाएंगे उसे उस घर में किसी चीज की कमी नहीं होंगी|

गरीब माँ सुनीता का पति बाइक चलाकर रात्रि के समय काम से घर आ रहा था, गाँव के रास्ते उबड़-खाबड़ थे. रास्ते के दोनों ओर खाई थी उसी खाई में सुनीता का पति बाइक लेकर गिर जाता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है| सुनीता को सिलाई करना आता था| पति के जाने के बाद वह सिलाई करके अपना और अपने एकलौती बेटी का खर्चा निकालने लगी| उसकी बेटी गुड़िया 8 वर्ष की थी जो चौथी कक्षा में पढ़ती थी| उसके पास पढ़ने की किताबें नहीं होती थी वह दूसरे बच्चों की तरह चतुर चालाक भी नहीं थी, भोली थी| सब बच्चे उसे पागल -पागल बोलकर चिढ़ाते थे उसकी माँ उसके लिए जो किताबें खरीद कर देती है| वो भी दूसरे बच्चे चोरी कर लेते थे| बेटी गुड़िया की माँ उसे नई किताबें नहीं खरीद कर दे पाती तो गुड़िया बहुत रोती है और वह रद्दी वाली दुकान पर जाती है और आसपास कोई नहीं होता और रद्दी वाला खाना खाने के लिए घर जाता था तो वह दुकान के बाहर पड़े रद्दी की किताबों को उठा लाती है और उन किताबों को पढ़ती है |

गरीब माँ बेटी को पूछती - कहाँ से आये किताबें तुम्हारे पास?

गुड़िया - स्कुल में जमीन पर किसी ने फेंका हुआ था, मैंने उठा लिया|

गरीब माँ – कोई भी चीज तुम ऐसे मत उठाया करो, इसे चोरी कहते हैं|

गुड़िया - चुराया नहीं, उठाया है| चुराने में और उठाने में फर्क होता है और वैसे भी कब तक जमीन पर पड़ा रहता है| कोई ना कोई उसे उठाता ही| इसलिए मैंने सोची मैं ही उठा लू |

इतना कहकर गुड़िया मन में बोलती है किताब तो नई खरीद कर दे नहीं सकी मेरी माँ और चोरी ना करू तो क्या करूं?

एक दिन दरवाजे पर गुड़िया खेल रही थी| तभी पड़ोस में रहनेवाली मेम साब उसके आती है| उसे प्यार से अपने पास बिठाकर अपने हाथो से बिस्कीट खिलाती है| गुड़िया रोटी नमक खा कर ऊब गई थी जो उसकी मां उसे रोज खिलाती थी| गुड़िया को वह मेम साब बहुत पसंद आती है क्योंकि उसे वह माँ जैसा स्नेह करती है और वह मेम साब पैसेवाली होती है|

गुड़िया अपनी गरीब माँ से कहती है - मां एक मेम साब बाहर मुझे दरवाजे पर मिली वो मुझे बिस्किट दी और मुझे वह बहुत अच्छी लगी|

गरीब माँ - तुम्हें वह मेम साब पसंद है? गुड़िया संकेत द्वारा ही हाँ कह देती है|

दूसरे दिन वह मेम साब वापस आती है| उसकी अपना कोई संतान नहीं होती| उसे गुड़िया पसंद आती है| गुड़िया भी उस मेम साब से बहुत घुलमिल जाती है| सुनीता यह सब देखकर सोचती है कि यह मेम साब करोड़ो की मालकिन है| मेरी बेटी उनके साथ खुश रहेगी| यह सोचकर सुनीता अपनी बेटी गुड़िया को गोद देने का निर्णय लेती है|

मेम साब सुनीता को कहती है “मैं गुड़िया को अपनी जान से भी अधिक प्यार करुँगी| मैं उसे अपने साथ मुंबई शहर ले जाना चाहती हूँ|

सुनीता कहती है - आप गुड़िया को अपने साथ ले जा सकती है वैसे भी मैं बहुत गरीब हूँ| उसके लिए कुछ कर नहीं सकती|

मेम साब गुड़िया को गाँव बाघराय से लेकर मुंबई शहर आ जाती है|

कुछ वर्ष बाद सुनीता भी गाँव से मुंबई आती है| मुंबई शहर मे वह एक मकान अधिक डिपॉजिट देकर रहती है| बड़े-बड़े लोगो के घर जाकर काम करती है| उसकी बेटी गुड़िया भी बड़े से घर में मेम साब के साथ रहती है| सुनीता गुड़िया से एक बार भी मिलने नहीं जाती| सुनीता को मेम साब के घर का पता मालूम रहता है|

कुछ साल बाद .. किस्मत से सुनीता और गुड़िया की मुलाक़ात हो जाती है| वह गुड़िया को देखती है जब गुड़िया विश्वविद्यालय से घर की ओर लौट रही होती है| तभी उसके सामने आ जाती है और गुड़िया को पकड़ कर रोने लगती है| गुड़िया की आँखों मे आंसू आ जाते हैं|

सुनीता कुछ रुपये बैग से निकालती हुई कहती है - ये ले बेटा पैसा अपने पास रखना कुछ अपने लिए ले लेना | गुड़िया कुछ नहीं बोलती वह पैसा वापस माँ के हाथ मे थमा देती है|

सुनीता कहती है - घर ठीक से जाना और अपना ध्यान रखना| इतना कहकर वह चली जाती है|

गुड़िया रोते हुए घर आती है और अपनी माँ मेम साब को सब कुछ बता देती है| यही उसकी और एक गरीब माँ की अंतिम मुलाक़ात होती है| गुड़िया अब नहीं जानती उसकी माँ इस वक़्त कहाँ है..........गुड़िया के आँखों के सामने माँ के साथ बिताये पुराने दृश्य सामने आते हैं| जब गुड़िया छोटी थी तो माँ कैसे उसे क, का, कि, की सिखाती थी, कैसे कहानी पढ़ी जाती है सिखाती थी वो सब यादे वह कैसे भूल सकती है क्या खून के रिश्ते भूले जा सकते हैं ?

कु. लक्ष्मी जायसवाल, एम. ए. प्रथम वर्ष, हिन्दी .

हिन्दी विभाग की साहित्यिक गतिविधियाँ

गुरु पौर्णिमा का आयोजन
दिनांक – 3 जुलाई, 2023
छात्राओं द्वारा गुरु के महत्व पर केंद्रित स्वरचित कविताओं का तथा गुरु के महत्व पर आधारित एकांकी का प्रस्तुतीकरण

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू अपने गोविन्द दियो बताय।
संत कबीर

पोस्टर और पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

दि. – 8 अगस्त, 2023

विषय - 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'

उप प्राचार्य डॉ. अवनीश भट्ट वर्तमान परिप्रेक्ष में साहित्य के इतिहास के महत्व को रेखांकित करते हुए ..

ग्रंथालय विभाग की अध्यक्ष अश्विनी प्रभु तथा हिन्दी विभाग के अध्यापक एवं छात्राएं

किताब जैसा वफादार कोई दोस्त नहीं।" –अर्नेस्ट हेमिंग्वे

अच्छी पुस्तकें जीवंत देव प्रतिमाएं हैं। उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है।"

पंडित श्रीराम शर्मा 'आचार्य

कार्यशाला का आयोजन

गुरुवार, दिनांक – 8 फरवरी, 2024 को हिन्दी विभाग द्वारा पथकथा लेखन विषय पर कार्यशाला का तथा हिन्दी नाटक – जिस लाहौर नहीं देख्या ओ जम्याई नई पर व्याख्यान का आयोजन किया गया था| इस अवसर पर मार्गदर्शक के रूप में वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार डॉ असगर वजाहत

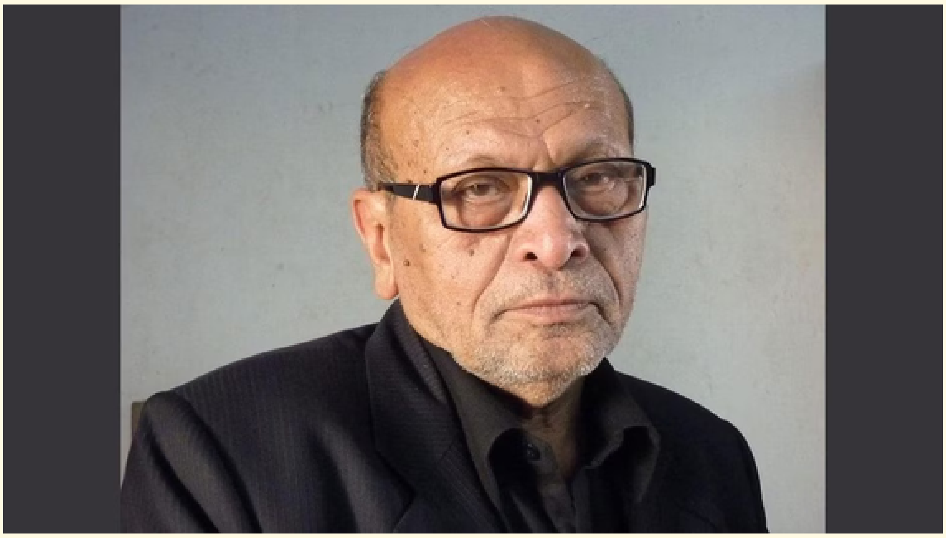

रचनाकार सदा मानवता के पक्ष में ही होता है| प्रगतिशीलता मानवता की व्याख्या करती है| भाषा, रंग, नस्ल, धर्म जाति, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानव कल्याण की कामना प्रगतिशीलता है| यह किसी प्रकार का आध्यात्मिक विचार नहीं है बल्कि उसके पीछे राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक चिंतन है| लेखक के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मानव समाज है |

डॉ असगर वजाहत, वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार, दिल्ली

परिसंवाद का आयोजन

डॉ भानुबेन महेंद्र नानावटी कॉलेज ऑफ होम साइंस (स्वायत्त) माटुंगा तथा राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार, दि – 21 मार्च, 2024 को

विषय - 'हिन्दी भाषा एवं साहित्य में अनुसंधान की स्थिति एवं संभावनाएं'

उद्घाटन सत्र में प्राचार्य डॉ अर्चना पत्की अध्यापकों,
शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को मार्गदर्शन करते हुए..|

प्रथम सत्र में डॉ सतीश पाण्डेय अध्यापकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को मार्गदर्शन करते हुए..|

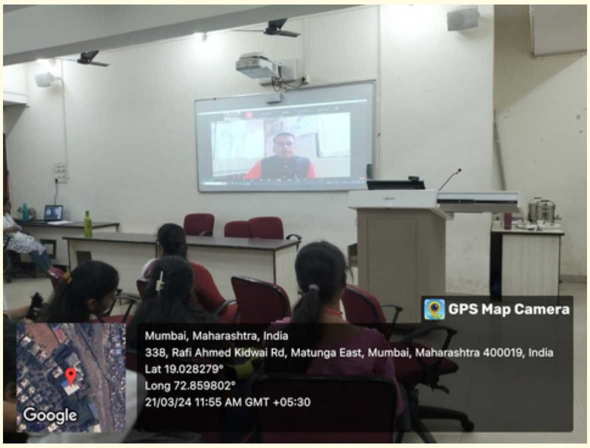

द्वितीय सत्र में डॉ गोकुल क्षीरसागर
अध्यापकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों
को मार्गदर्शन करते हुए..|

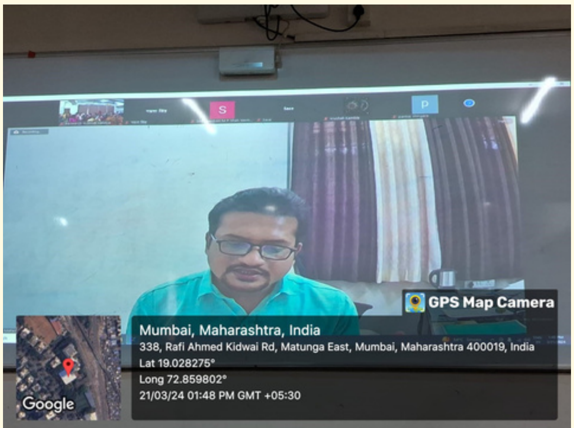

तृतीय सत्र में डॉ महेश दवंगे अध्यापकों,
शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को मार्गदर्शन
करते हुए..|

अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 26 फरवरी 2024,

वक्ता - डॉ. दत्तात्रेय गावड़े

विषय - बजट, सेविंग, मुनाफा और बचत के विविध आयाम

अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दि - 7 जुलाई, 2023

वक्ता - वेदश्री भागवत

विषय - ‘Pride and Inclusion’

अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दि. - 10/01/2024

विषय - आहार की गुणवत्ता में सुधार के उपाय

वक्ता - डॉ माधवी साठे

ऑनलाइन अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दि. 04 जनवरी, 2024

विषय - इंटर्नशिप के दौरान आवश्यक 'अध्यापन कौशल'

वक्ता - मीना छेड़ा, (पी. एन. दोषी महाविद्यालय)

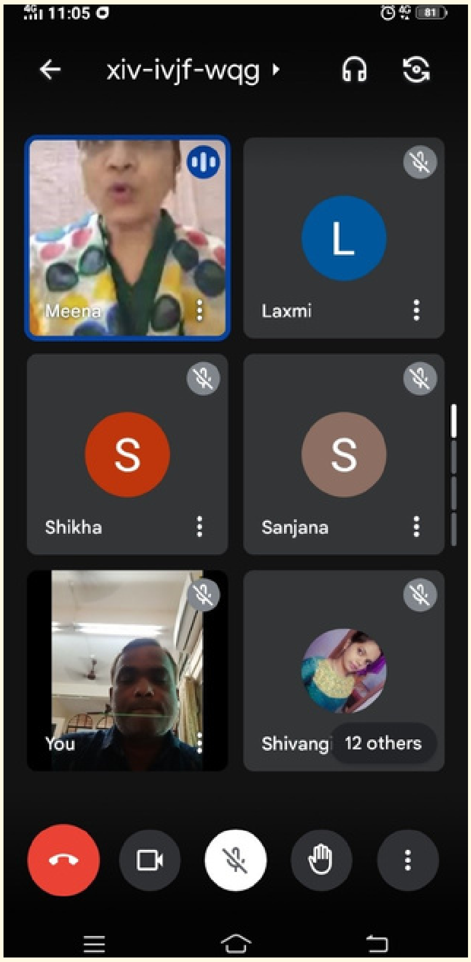

हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

दि. 14 सितंबर, 2023 से दि. 27 सितंबर, 2023

दिनांक -14 सितंबर, 2023 को निबंध प्रतियोगिता

दिनांक – 15 सितंबर, 2023 को वक्तृत्व प्रतियोगिता

दिनांक – 16 सितंबर, 2023 को काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

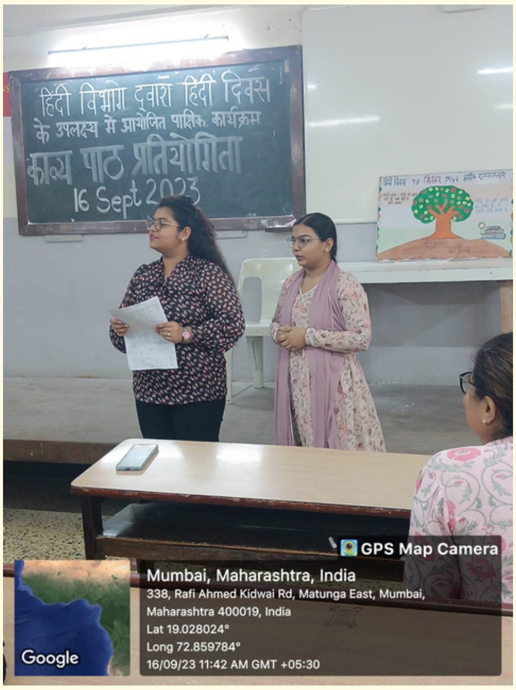

अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दिनांक – 22 सितंबर, 2023

विषय - ‘हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य : विकास की संभावनाएं’

वक्ता - डॉ. श्यामसुंदर पांडे असोसिएट प्रोफेसर, (बी. के. बिड़ला महाविद्यालय, कल्याण, ठाणे)

नाट्य प्रस्तुति का आयोजन
दिनांक - 25 सितंबर, 2023

लोकगीत प्रस्तुति एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन
दिनांक – 23 सितंबर, 2023

अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दिनांक – 27 सितंबर, 2023

विषय - 'नेट/सेट परीक्षा पेपर - 1'

वक्ता - पल्लवी जोशी (व्याख्याता, मानसशास्त्र विभाग)

मुंशी प्रेमचंद जयंती
दिनांक - 31 जुलाई, 2023

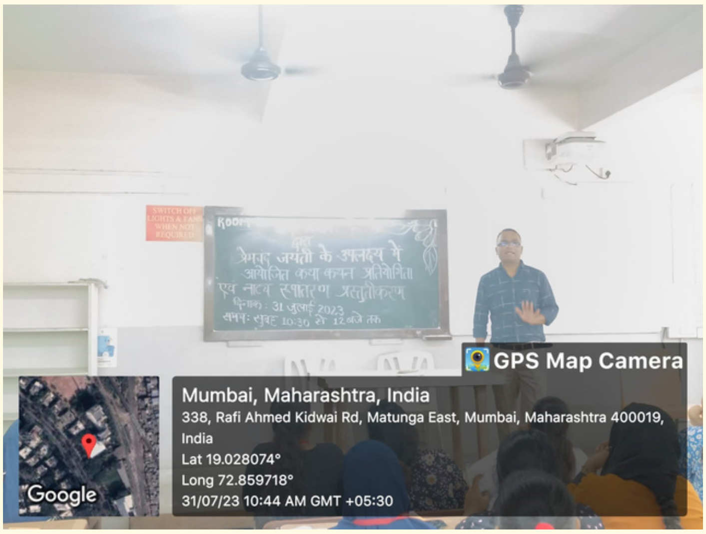

कुल का मान विनम्रता और सदव्यवहार से होता है|
मुंशी प्रेमचंद

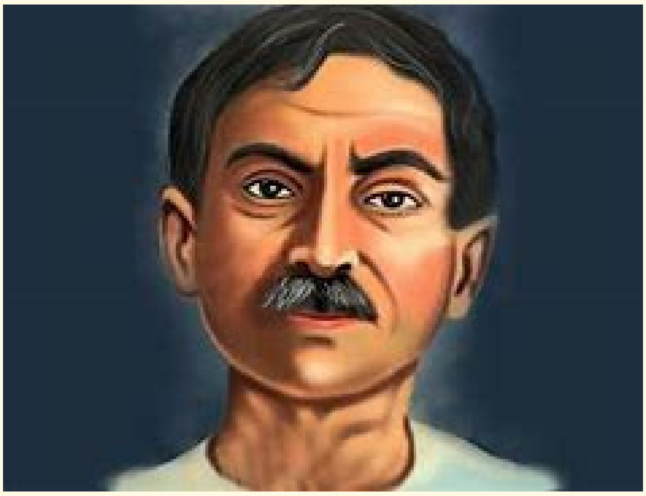

बसंत पंचमी और निराला जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित काव्यपाठ

दिनांक - 14 फरवरी 2024

कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती पूजन से किया गया। विद्यार्थियों ने निराला जी की कविताओं के पाठ के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डाला। कुछ विद्यार्थियों ने बसंत पंचमी और सरस्वती के महत्व को रेखांकित किया।

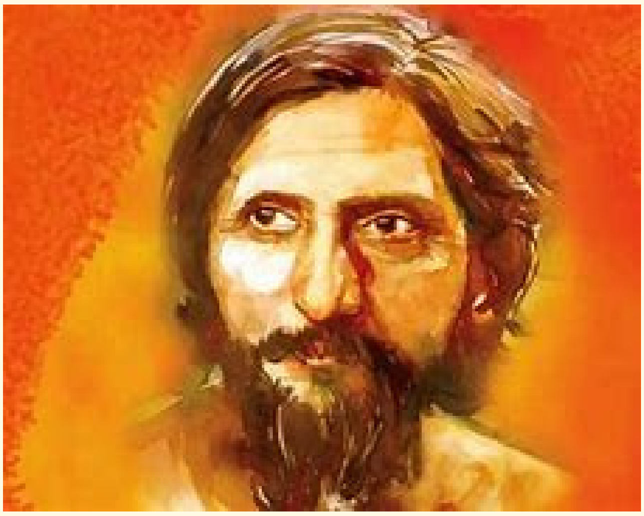

महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

अभी न होगा मेरा अन्त
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसन्त-
अभी न होगा मेरा अन्त
हरे-हरे ये पात,
डालियाँ, कलियाँ कोमल गात!
मैं ही अपना स्वप्न-मृदुल-कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर
पुष्प-पुष्प से तन्द्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नवजीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,
द्वार दिखा दूँगा फिर उनको
है मेरे वे जहाँ अनन्त-
अभी न होगा मेरा अन्त।
मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण,
इसमें कहाँ मृत्यु?
है जीवन ही जीवन
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन
स्वर्ण-किरण कल्लोलों पर बहता रे, बालक-मन,
मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बन्धु, दिगन्त;
अभी न होगा मेरा अन्त।

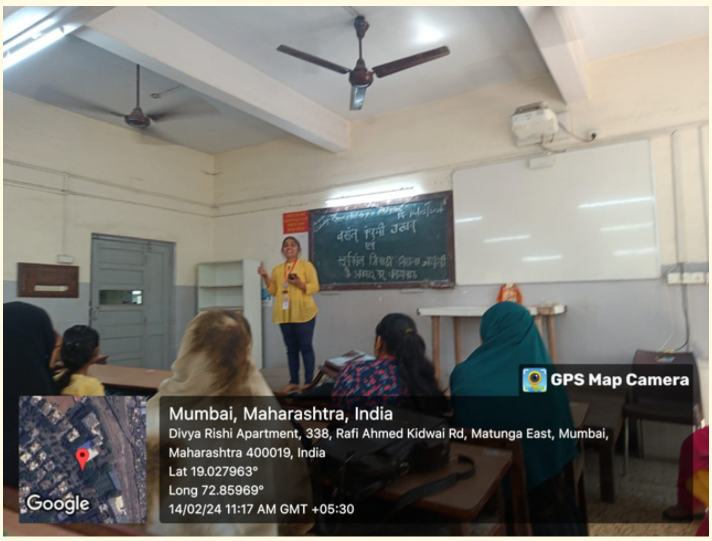

हिंदुस्तानी प्रचार सभा – अध्ययन यात्रा

दिनांक – 6 जनवरी, 2024

स्थान - हिंदुस्तानी प्रचार सभा, चर्नी रोड, मुंबई

हिंदुस्तानी प्रचार सभा के कार्यकारी अधिकारी डॉ. रीताकुमारी, परियोजना समन्वयक श्री राकेशकुमार त्रिपाठी के साथ हिन्दी विभाग के अध्यापक एवं विद्यार्थी

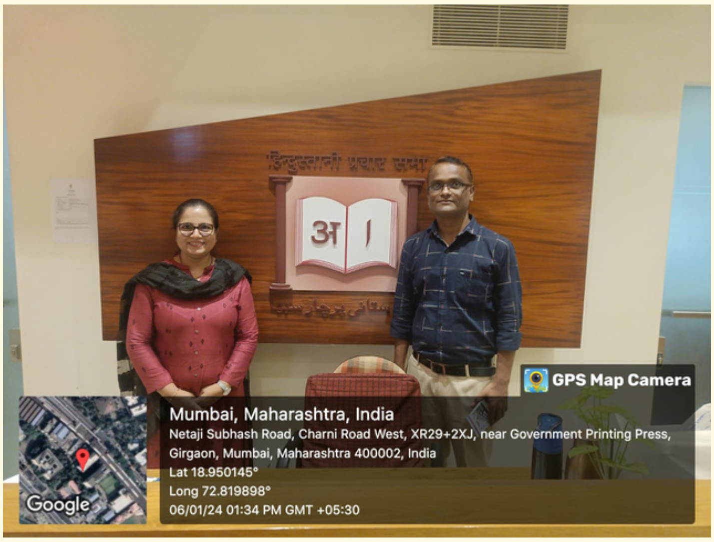

विस्तार गतिविधि (Extension Activity) का आयोजन

दिनांक – 02 फरवरी, 2024

स्थल - बाल सुधार गृह , डोंगरी, सैंडहर्स रोड (पश्चिम)

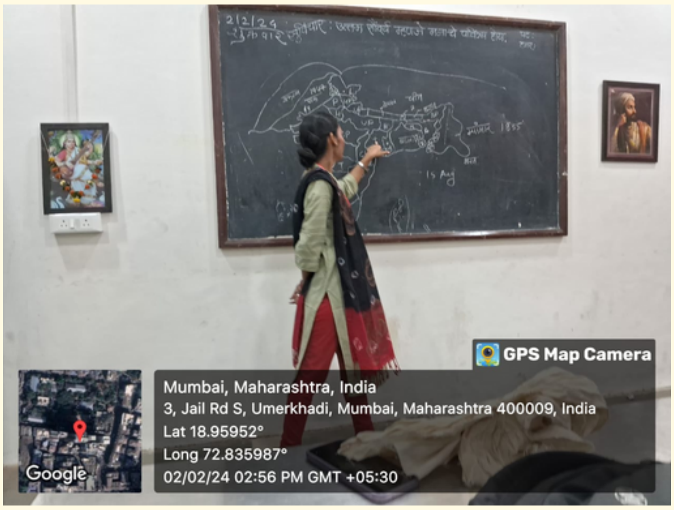

आंतरमहाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा का आयोजन
दिनांक - 14/07/2023
विषय - 'अवयव दान' (Organ Donation)

विभिन्न महाविद्यालयों से हिन्दी के कुल 23 निबंध प्राप्त हुए|

परीक्षक जिज्ञासा एच. खारो (श्रीमती एच. एम. नानावटी होम साइंस कनिष्ठ महाविद्यालय, माटुंगा)
और
डॉ. दक्षा मावदिया (श्रीमती मणिबेन एम. पी. शाह कनिष्ठ महाविद्यालय, माटुंगा)

निबंध स्पर्धा का परीक्षण भाषा, विषय ज्ञान और प्रस्तुतीकरण आदि मानदंडों के आधार पर किया गया|
निबंध के परिणाम इस प्रकार है -

प्रथम पुरस्कार –
महेक इलेशकुमार गाँधी (मीठीबाई कला महाविद्यालय, विलेपार्ले)

द्वितीय पुरस्कार –
पूनम प्रजापति (बी. एम. रुइया गर्ल्स महाविद्यालय, मुंबई)

तृतीय पुरस्कार –
श्वेता मिश्रा (के. सी. कॉलेज मुंबई)

प्रोत्साहन पुरस्कार –
गांचा प्रीति रतनलाल (एस. पी. एन. दोषी महिला महाविद्यालय, घाटकोपर)

हिन्दी विभाग के अध्यापकों का सहभाग

तुलजापुर, धाराशिव (उस्मानाबाद) में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सायन्स (TISS) के कैंपस में आयोजित फ़ैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (FDP) में सहभागिता -
दिनांक – 26 फरवरी, 2024 से 01 मार्च, 2024
प्रमाणपत्र स्वीकारते हुए डॉ प्रशांत देशपांडे

पुणे में आयोजित फ़ैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (FDP) में सहभागिता
दि - 15/1/2024 से 19/1/2024
प्रमाण पत्र स्वीकारते डॉ वृषाली चौघुले

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

सोहनलाल द्विवेदी